www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha
May 2023

ISSN : 2395-71
Page No. : 145-1

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

हिंदी गजल की अवधारणा एवं विकास

डॉ. निर्मला जोशी (असिस्टेंट प्रोफेसर हिंदी विभाग)
S.B.S. Govt P.G Collage, Rudrapur (U.S. Nagar) Uttarakhand.

सभी कलाओं में काव्य कला को सर्वोपरि स्थान दिया जाता है। गजल भी काव्यकला का ही एक रूप है वर्तमान में गजलों का महत्व बढ़ा है। पहले गजलें राजदरबार एवं कोठियों तक ही सीमित थी लेकिन अब वे अप पहुंच जनसामान्य तक बना चुकी हैं। शताब्दियों पहले गजलों का विकास अरबी-फारसी भाषा में हुआ था लेकि कालांतर में गजलों ने अपना क्षेत्र-विस्तार करते हुए हिन्दी साहित्य में भी स्थान बना लिया। साहित्य समाज का दर्प है और जिस साहित्य में सामाजिक भावनाओं और सामाजिक समस्याओं को उठाने की जितनी भावनाएं होंगी उस स्थान भी उसी अनुरूप बढ़ जाता है। आज गजलों में सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक तथा आर्थिक समस्याओं को स्थान मिलने लगा है जिससे गजलें राजदरबार व कोठियों से निकलकर समाज के सभी लोगों तक अपनी पहुंच बन में सक्षम हुई है।

गजल को हिन्दी में लाने का प्रयास अनेक विद्वानों द्वारा किया गया जिनमें कुछ नाम अग्रलिखित हैं- अमी खुसरो, कबीर, श्रीधर पाठक, जानकी वल्लभ शास्त्री, अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध', भारतेंदु हरिश्चंद्र, जयशंक प्रसाद आदि। परंतु गजलों को सर्वप्रथम प्रतिष्ठित करने का कार्य दुष्यंत कुमान ने किया है। गजलों के विषय में समझ के लिए उसके असली रूप को समझना परमावश्यक है। गजल का भी अपना एक विशेष रूप रहा है। अपनी कोमल और श्रृंगारिकता के कारण गजलें सबका मन मोह लेती है। गजलों में मानवीय भावनाओं को व्यक्त करने की पूर्ण क्षम होती है। गजलों में संक्षिप्तता और गहराई बहुत अधिक है। गजल अरबी भाषा का शब्द है- 'मुहब्बत के जज्बात व्य करना'। अरब देश में बहले गजल को 'कसीदा' कहते थे। कसीदा अर्थात् किसी की शान में कुछ कहना। "जैसे दाद गाने से पहले शेर पढते हैं उसी तरह कसीदा से पहले कड़ी बांधने के लिए गजल कहते थे। फारसी में अन्य स्थान प गजल को सुंदर स्त्रियों से बातचीत करना बताया गया है। गजल को कोई "जवानी के हाल का बयान करना भी कह हैं"।[1] गजल शब्द के शाब्दिक अर्थ बहुत से हैं। गजल अपने आप में साहित्य की एक धनी विधा है।

वर्तमान में गजल को काव्य की महत्वपूर्ण विधा के रूप में स्थान प्राप्त है। काव्य की कई अन्य विधाओं अगर इसकी तुलना की जाये तो गजल सबसे प्रभावशाली एवं पाठकों का मन मोह लेने वाली एक विधा एक रूप हमारे समक्ष आती हैं। 'गजल' अरबी भाषा का शब्द है लेकिन गजलें फारसी भाषा में मिलती हैं। फारसी भाषा से आ चलकर उर्दू भाषा में उसका आगमन हुआ। मराठी, हिन्दी, पंजाबी, गुजराती भाषाओं में भी गजलें लिखी जाने लगी पुरानी सभी काव्य विधाओं में गजल ही एक ऐसी काव्य विधा है जिसने पुराने ख्याल छोड़कर नये को अपनाते हुए अप मुकाम पर कायम रही। "वास्तविकता यह है कि गजल विखराव के युग में अपने आप को समेटने और संतुलित कर

Scanned with OKEN Scanner

पर जोर देती रही है।''[2]

गजल की परिभाषा विद्वानों ने अपनी-अपनी अवलोकन दृष्टि के आधार पर अनेक प्रकार से दी है। किसी सफी नामक शायर ने कहा है कि :-

''शायरी क्या है, दिली जज्बात का इजहार है,
दिल अगर बेकार है, तो शायरी भी बेकार है।''[3]

इस तरह शायरी का सीधा ताल्लुक दिल से बताया गया है। 1400 वर्ष पूर्व अरबों ने ईरान को जीत लिया था तो उन्होने अरबों से गजल काव्य को लेकर बहुत सजाया संवारा तथा विकास किया। फारसी में गजल को ''बाजनान गुफ्तगू कर देन'' के रूप में परिभाषित किया गया है जिसका अर्थ है औरतों से बातचीत करना। ''गजल किसी तथ्य को भाव द्वारा समझने का प्रयास है, मनुष्य के अपराजित महात्म्य का अभिषेक है, अनुभव की पगडण्डी और विचारों के चौरास्तों पर की गई शब्द की पदयात्रा है। गजल उत्तेजना नही वरन एक सार्थक विचार है।''[4]

फिराक गोरखपुरी ने कहा है कि गजल के शेरों में इंसानियत का होश आ जाता है। ''वास्तव में गजल टूटे हुए दिलों का दर्द है। गजल गागर में सागर भरता है''। गजल में केवल प्यार और मोहब्बत की ही बात नही की जाती बल्कि इसमें सम्पूर्ण मानवीय व्यवहार समाया हुआ है।

''दामने इश्क में कोनेन सिमट आती हैं,
दोनों आलम की खबर हो, तो गजल होती है।''[5]

वास्तविकता तो यह है कि गजल की आधुनिक काव्य का विखरा हुआ रूप है। जिस प्रकार कविता मानव के हृदय के अंतस्थल से निकलती है उसी प्रकार कविता गजल भी।[6] गजल हिन्दी-उर्दू-फारसी की एक खूबसूरत, लोकप्रिय और प्रशंसनीय काव्य-विधा है और दूसरी ओर वह मन के भावों की अभिव्यक्ति का सशक्त साधन भी है। गजल जिंदगी का आइना भी है। गजल छंदोबद्ध अंतर्मुखी काव्य भी है।[7] इसी प्रकार गजल को परिभाषित करते हुए एक स्थान पर कहा गया है कि ''गजल का अर्थ है इश्क का इजहार करना, औरतों का वर्णन करना''।[8] गजल शब्द का अरबी भाषा में अर्थ है- ''औरतों से बातें करना''। दूसरी ओर गजल शब्द का अर्थ है कि औरतों या प्रेमिका से बातें करना। गजल की एक खास विशेषता है कि इसमें कशिश भरी द्रवणशीलता होती है। इस तरह गजल का सर्वसाधारण से एक अर्थ यह निकाला जाता है कि माशूक से बातचीत का माध्यम।[9]

जब हम हिन्दी में गजलों के आगमन की बात करते हैं तो उसके पूर्व तात्कालिक सामाजिक-राजनीतिक पृष्ठभूमि को देखना आवश्यक हो जाता है। भारत में मुस्लिमों का आगमन मुहम्मद गोरी के शासनकाल से ही प्रारम्भ होता है। यही वह समय था जब फारसी उर्दू गजलों का बोलबाला था। इन्ही लोगों के सम्पर्क में आकर हिन्दी गजलों का भी उद्‌भव होना प्रारम्भ हुआ। गुलाम वंश की अंतिम कड़ी गयासुद्दीन बलवन के दरबार में एक सुविख्यात कवि और शायर रहा करते थे जिनका नाम था अमीर खुसरो। इन्ही अमीर खुसरो को भारत में गजल का जन्मदाता माना जाता है। लेकिन हिन्दी में गजलों का स्वरूप वैसा नही था जैसा फारसी में था। हिन्दी गजल देशभक्ति, इंसानी दर्द और कोमी-बेदारी से भरी हुयी है। ''यह विचारणीय है कि उर्दू भाषा के विद्वान फारूख साहब ने विषय वस्तु की दृष्टि से उर्दू और हिन्दी की गजलों में अंतर स्पष्ट करते हुए हिन्दी गजलों में उर्दू शब्द का प्रयोग भी किया है''।[10]

Scanned with OKEN Scanner

हिन्दी गजल का उद्‌भव तेरहवीं सदी में हुआ। अमीर खुसरो ने हिन्दी की पहली गजल लिखी। उन्हें हिन्दी गजल का जन्मदाता कहा गया है। अमीर खुसरो गुलाम वंश के अंतिम शासक गयासुद्दीन बलवन के दरबार में रहते थे। ये बलवन के पुत्र कैकुवाद के दरबार में भी रहे। इनकी तीन पुस्तकें मानी जाती हैं- 1. खिजरतुल फुतह 2. तुगलकनामा 3. तारीखे अलाई।

'दीवान-ए-कामिल अमीर खुसरो' में इनकी गजलों की संख्या 1726 मानी जाती है। अमीर खुसरो के भारत में पैदा होने के कारण उनकी गजलों में फारसी संस्कार के साथ-साथ हिन्दी संस्कार भी परिलक्षित होते हैं। एक उदाहरण दृष्टव्य है :-

''जब मार देखा नैन भर दिल की गई चिंता उतर
ऐसा नही कोई अजब, राखे उसे समझाय कर
जब आंखों से ओझल भया, तड़पन लगा मेरा जिया
हक्का इलाही क्या किया, आंसू चले भर लाचकर
तू तो हमारा यार है, तुझ पर हमारा प्यार है.....''[11]

गजलगोई को खुसरों महत्व नही देते। उनकी गजलें बड़ी प्रभावशाली लगती हैं। जहाँगीर ने खुसरों की गजलों को बहुत सराहा था। सारांश रूप में कहा जा सकता है कि अधिकांश विद्वानों खुसरो को हिन्दी का पहला गजलकार मानते हैं।

खुसरो के उपरांत हिन्दी गजलों को आगे ले जाने में तात्कालिक संतकवि कवीरदास का भी योगदान भी महत्वपूर्ण है। कबीरदास ने अपनी वाणी में यत्र-तत्र गजलों का समावेश किया है :-

हमन है इश्क मस्ताना हमन को होशियारी क्या?
रहे आजाद या जग से हमन दुनिया से भारी क्या?[12]

आधुनिक काल में भारतेंदु, श्रीधर पाठक, जानकी वल्लभ शास्त्री, अयोध्या सिंह उपाध्याय हरिऔध, जयशंकर प्रसाद आदि का भी योगदान महत्वपूर्ण रहा है। हिन्दी गजलें फारसी-उर्दू गजलों की तरह प्रेम, इश्क, शराब-शबाब की बातें नही करती बल्कि उनमें वस्तुतरू समकालीन सामाजिक, आर्थिक तथा राजनैतिक चेतना एवं सांस्कृतिक अवमूल्यन के विक्षोभ का वर्णन परिलक्षित होता है। समकालीन गजलकार दुष्यंत कुमार ने हिन्दी गजलों को एक नया आयाम प्रदान किया है। दुष्यंत कुमार के गजल संग्रह 'साये में धूप' की लोकप्रियता ने बहुत से कवियों विशेषतया छंदधर्मी कवियों को इधर उन्मुख कर दिया। इधर तो कई गजल संग्रह आये हैं, उनमें से कुछ उल्लेखनीय हैं :-

शामियाने का करे	-	कुंवर बेचैन
नीम की पत्तियां	-	राजकुमार कृषक
धूप के हस्ताक्षर	-	ज्ञान प्रकाश विवेक
सूर्य का सवाल	-	माधव मधुकर मिश्र
बाजार को निकलते हैं लोग	-	रामदरश मिश्र

निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि हिन्दी गजलों पर फारसी-उर्दू गजलों का प्रभाव अवश्य है लेकिन हिन्दी गजलों में जिन सामाजिक मूल्यों को उठाया जा रहा है वे पूर्णतया भारतीय हैं और हिन्दी काव्य के विकास की एक शाखा हैं।

Scanned with OKEN Scanner

संदर्भ-ग्रंथ सूची :-

1. जदीद उर्दू शायरी- मौलाना अल्ताफ हुसैन, पृ. सं.- 48
2. सन्नाटे में गूंज- डॉ. गिरिराजशरण अग्रवाल, पृ. सं.-10
3. गजल एक अध्ययन- चानन गोविंद पुरी, सीमांत प्र. 1991, पृ. सं.-11
4. रस्सियां पानी की- डॉ. कुंवर बेचैन, प्रगति, पृ. सं.- 12
5. शामियाने कांच के- डॉ. कुंवर बेचैन, पृ. सं. -10
6. गजल एक अध्ययन- चानन गोविंद पुरी, सीमांत, प्र. 1991, पृ. सं-44
7. हिंदी गजल के विविध आयाम- डॉ. सरदार मुजावर, पृ. सं. 213
8. संगीत गजल अंक- स. बालकृष्ण गर्ग, पृ. सं. -5
9. आईना-ए-गजल- स. जरीना साहनी, पृ. सं. - 242
10. हिंदी गजल संदर्भ और सार्थकता- डॉ. वेद प्रकाश अमिताभ, पृ. सं.-24
11. अमीर खुसरो और उनका हिंदी साहित्य- डॉ. भोलानाथ तिवारी, पृ. सं.- 133
12. कविता कौमुदी, चौथा भाग- स. रामनरेश त्रिपाठी, पृ. सं. -6

Email id - singhbhupatrajput566@gmail.com

Mob. No- 7651817742

Address :-

Dr. Nirmala Joshi c/o Sri Harish Chandra

Karnatak AmbaVihar

Near- Shiv Temple, Talli Bamori Haldwani

Nainital (Uttarakhand)

Scanned with OKEN Scanner